29.1.67 प्रातःक्लास–सदैव नई तो रह नहीं सकती।चक्र फिरना है।तो नीचे जरूर आयेंगे।हर एक चीज नई फिर पुरानी जरूर होती है।मनुष्य तो जैसे तवाईयों मिसल जो आता है बकते रहते हैं।बिगर अर्थ बकने वाले को चरिया कहा जाता है।राम की सीता चुराई गई।राम ने बंदरों की सेना ली।यह सब चर्याई बनाई है।बाप आकर गुलगुल बनाते हैं।कहते हैं व्यास भगवान ने शास्त्र बनाये हैं।तो वो भी ऐसा चरिया निकला जिसने इतनी चरियाई बैठ लिखी है।अभी इन बातों पर वण्डर लगता है।अच्छा ,ओमशांति। मुरली की प्वाइंट–अभी तुम समझते हो भक्तिमार्ग क्या है।कृष्ण के भक्त कृष्ण के आगे धूप जगावें तो राम के भक्त राम का नाम बंद कर देते हैं।कितने चरिये हैं।कमाल की है ना।शास्त्र तो ऐसे बनाये हैं जिनमें झूठ ही झूठ सच्च की रत्ती नहीं।झूठ को ऐसे पकड़कर बैठते हैं जो छोड़ते ही नहीं।क्या व्यास ने बैठ बनाया?मनुष्यों का तो बेड़ा ही गर्क कर दिया है।सीढ़ी उतरते ही आये हैं।सबकी दुर्गति हो गई है।बाप आकर सद्गति करते हैं।यह भी समझते नहीं कि रावण ने पूरी दुर्गति करी है।भक्तिमार्ग वाले हैं ही चरिये।चरियों को सच्च बताये तो भी बिगड़ पड़ते हैं।सच्च कहने पर भी मिर्ची लगती है।हम कहते हैं यह बाप समझाते हैं तो इस पर भी मिर्ची लगती है।अब तुम जानते हो यह गुरू गुसाईं बड़े ऐप्स हैं।कितनी पुस्तकें बैठ बनाईं हैं जिनमें ग्लानी ही लिखी हुई है।कितना रौला मचा दिया है।।

31.1.67रात्री क्लास–याद की यात्रा से बाप को याद करना है।जाना है फिर आना है।बच्चों को जाना है फिर आना है पार्ट बजाने के लिए।घर को और बादशाही को याद करना है।शरीर होते कर्म भी तो करना ही है।जब तक यहां हैं कर्म भी करना है।जो भी मिले उनको घर का और राजधानी का रास्ता बताना है।घर को और राजधानी को याद करना और शरीर निर्वाह अर्थ काम करना।तुम बच्चे ही जानते हो अभी हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनियां का मालिक बनना है।गुडनाइट बच्चों को।